निहारिका जैन, प्रत्येक अस्वीकृति नवीन स्वीकृतियों को जन्म देती है सृजनात्मकता की स्वतंत्र उड़ान, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 30*

प्रत्येक अस्वीकृति नवीन स्वीकृतियों को जन्म देती है सृजनात्मकता की स्वतंत्र उड़ान

निहारिका जैन*

मनुष्य जीवन में अस्वीकृति (Rejection) का सामना करना जितना आम है, उतना ही गहरा उसका प्रभाव भी होता है। कोई रचना अगर अस्वीकृत होती है, तो उसे कई बार अंतिम सत्य मान लिया जाता है – लेकिन यही दृष्टिकोण सृजनात्मकता के मूल स्वभाव के विपरीत है।

अस्वीकृति का अर्थ अंत नहीं, एक नई शुरुआत है

जब हमें कोई ठुकरा देता है – हमारा विचार, हमारी रचना, या हमारा प्रयास – तो यह स्वाभाविक है कि हम निराश हों। लेकिन यदि हम अस्वीकृति को एक सीढ़ी मानें, न कि दीवार, तो हम पाएँगे कि यही अस्वीकृति हमें नए दृष्टिकोण, नई ऊर्जा और नवीन रचनात्मकता की ओर प्रेरित करती है।

हर 'ना' के बाद एक नया 'हाँ' जन्म लेता है – कभी बाहरी दुनिया से, और कभी हमारे अपने भीतर से।

सृजनात्मकता: स्वीकृति से स्वतंत्र

सृजनात्मक होना स्वयं में एक कला है। यह किसी संस्था, व्यक्ति या समाज की मुहर पर आधारित नहीं होता। कोई चित्रकार जब कैनवास पर रंग बिखेरता है, वह यह सोचकर नहीं करता कि लोग सराहेंगे या नहीं। एक कवि जब शब्दों को पंक्तियों में पिरोता है, वह पहले अपनी भीतर की आवाज सुनता है।

सृजन की पहली स्वीकृति स्वयं से होती है, और यही सबसे महत्वपूर्ण है।

इतिहास के उदाहरण

विन्सेंट वैन गॉग के चित्र उनके जीवनकाल में अस्वीकृत हुए। जेम्स जॉयस, जे.के. रोलिंग, और रवीन्द्रनाथ ठाकुर तक को प्रारंभ में अस्वीकार किया गया। लेकिन क्या इससे उनकी सृजनात्मकता थमी? नहीं। उन्होंने अपनी राह खुद बनाई, और समय ने उनकी प्रतिभा को स्वीकृति दी – वह भी इतिहास के पन्नों में।

निष्कर्ष

अस्वीकृति डरावनी नहीं है, बल्कि यह एक संकेत है कि आप एक ऐसे मार्ग पर हैं, जो भीड़ से अलग है। यह वह ध्वनि है जो आपको पुकारती है – "आगे बढ़ो, नया सोचो, नया रचो।"

इसलिए, यदि आपकी किसी रचना को अस्वीकार किया गया है, तो याद रखिए:

"प्रत्येक अस्वीकृति नवीन स्वीकृतियों को जन्म देती है, साथ ही जन्म होता है नवीन सृजनात्मक का। सृजनात्मक होना कला है, स्वीकृत और अस्वीकृत होने का कल से कोई संबंध नहीं है।"